National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2017; 1(13): 104-105
© 2017 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Sina A. R
Assistant Professor,
M.E.S.Ponnani College, Ponnani,
Malappuram, Kerala.

Correspondence:
Dr.Sina A. R
Assistant Professor,
M.E.S.Ponnani College, Ponnani,
Malappuram, Kerala.

मोहन राकेश के साहित्य में वैयक्तिक जीवन का प्रभाव।

डॉ. सीना ए. आर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20444326

Abstract:

➢मोहनराकेश का वैयक्तिक जीवन।
➢साहित्य और जीवन।
➢मोहनराकेश के साहित्य में वैयक्तिक जीवन का प्रभाव।
➢निष्कर्ष।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। मनुष्य सामूहिक प्राणी है और समाज की इकाई भी है। साहित्यकार समाज में देखने वाली बातों को अपना कर अपनी रचनाओं में प्रतिपादित करने की कोशिश करते हैं। साथ ही साथ ऐसा भी होता है, साहित्यकार को भी समाज में बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में गुजरना पड़ता है। साहित्यकार को कभी-कभी साहित्यिक रचनाओं में अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को भी चिशत्रित करना पडता है। इस बात पर ध्यान रखते हुए मोहन राकेश और उनकी रचनाओं का विहगवीक्षण करने का प्रयास है।

राकेश जी बहुमुखी प्रतिभा के मौलिक कलाकार थे। उनका वास्तविक नाम था मदन मोहन गुगलानी । वह नई कहानी आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर हैं। वे श्रेष्ठ नाटककार तो थे ही, उन्होने हिन्दी को कुछ स्मरणीय कहानियाँ दी, युगबोध को रेखंकित करनेवाले-उपन्यास दिये, साथ ही कई एकांकी, प्रयोगनाटक, यात्राविवरण, निबन्ध आदि लिखकर राकेश जी ने हिन्दी साहित्य को समृध्द किया।राकेश जी का जीवन और व्यक्तित्व एक खुली किताब की तरह रहा है। उन्होंने जो कुछ जिया और उसका आभास उनकी डायरियों और मित्रों के संस्मरणों में मिल जाता हैं।

डा.पुष्पा बंसल ने मोहन राकेश का व्यक्तित्व उनके साहित्य में समाया, संजोया माना है, "मोहन राकेश का सम्पूर्ण साहित्य उनके निज को ही व्यक्त करता है।उनके व्यक्तित्व की सही तस्वीर न उनके पहननेवाले से पनाह माँगती पतलून,टाई की ढीली मुट्ठी-सी गाँठ और कोट की आस्तीन से चार आँगूल बाहर निकले कमीज की कफ में हैं, न उनके ठहाकों में! न उनकी बियर की बोतलों के बिलों में है और न गोल्ड-फ्लेक के टिनों के हिसाब में "।

असली मोहन राकेश अपनी कृतियों में है।असली राकेश कालिदास में है जो राज्याश्रित लेखन का परीक्षण करता है और उसे ठुकरा देता है, असली राकेश नन्द में है जो पार्थिवता से बहुत गहरे जुडकर भी आपने जीवन की वास्तविक दिशा -नए बिन्दु खोजने को व्याकुल रहता है,जो कहीं भी प्रगाढतम रूप से सम्बध्द होने पर भी अपने अन्तर्मन की बात पूरी तरह नहीं कह पाता,क्योंकि वह मानता है कि मन की बात कहकर आदमी छोटा हो जाता है।असली राकेश महेन्द्रनाथ में है जो मित्रों की महाफिलों को आबाद रखने केलिए अपने पर, पत्नी पर, परिवार पर जुल्म करता है और पत्नी की प्रसन्नता तथा जीवन के स्वागत के लिए बडा और शानदार फ्लैट किराए पर लेता है। उसे बहुमूल्य चीजों से सजाता है, रोज शाम को गजरे और वेणियाँ लाता है

और जिसको घर कभी आश्रय नहीं देता। मोहन राकेश मुहम्मद अयूब में है जो अपने को -अपनी आवश्यकताओं को टटोलता है और पता है कि उसे ऐसी औरत चाहिए जो मौत के खतरे के बावजूद भी उसका साथ न छोडे अर्थात् जो उसेअधिकार दे, माँगे नहीं।

परिस्थितियों से घबराकर उनसे समझौता करने की बजाय, फकीरों की तरह स्वच्छन्द जीवन बिताना उन्हें ज्यादा प्रिय था।मोहन राकेश के व्यक्तित्व के विविध पक्ष समय-समय पर उजागर होते रहे।वे बहुमुखी व्यक्तित्व के लेखक थे।

"एक तरफ उनका प्रबुध्द बुध्दिजीवी का रूप है तो दूसरी ओर गहन संवेदनशील व्यक्ति का स्वरूप। एक ओर यदि अति बौध्दिकता है तो दूसरी ओर अति भावुकता"। दोस्ती में उन्होंने नावटीपन,औपचारिकता या आडम्बर को कभी पनपने नहीं दिया।

मोहन राकेश के स्वभाव और व्यक्तित्व में विचित्र विरोध भरा था। इसलिए कुछेक आलोचकों ने उन्हें विभाजित व्यक्तित्ववाला भी कहा है। राकेश जी का यह व्यक्तित्व स्वाभाविक ही कहा जायेगा क्योंकि एक ओर उन्होंने हिन्दी के लेखकीय समान को ऊँचा उठाया तो दूसरी ओर किसी भी प्रकार के बाहरी दबाव से मुक्त होकर लिखने की प्रेरणा को महत्व दिया। "मोहन राकेश का व्यक्तित्व भविष्य के प्रति आस्था और विश्वास की शक्ति से जडित था। वे आज के युग के सबसे बडे आस्तिक थे।" मोहन राकेश का हिन्दी प्रेम अद्विितीय था- यह उनके व्यक्तित्व का भव्य रूप है।वे भारतीय भाषाओं और विशेषकर हिन्दी को अंग्रेजी से किसी दृष्टि से कम नहीं समझते थे- राष्टीय चरित्र के निर्मण केलिए वे हिन्दी का विकास अपरिहार्य मानते थे।

हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाट्यलेखक और उपन्यासकार श्री मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 में पंजाब के अम्रतसर में हुआ। उनका वास्तविक नाम था-मदनमोहन गुगलानी। राकेश का परिवार बहुत बडा और वैष्णवों पर आधारित था। राकेश के पिता करमचन्द गुगलानी अमृतसर के एक नामी वकील थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। राकेश के सोलह वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु हुई। उनकी माँ बडी सरल तथा धार्मिक प्रकृती की थीं। बचपन से ही माँ और पुत्र के बीच में एक अपूर्व स्नेह की भावना थी। पिता की मृत्यु के बाद माताजी ने पुत्र से पूछा -" तू अब से मेरी रखवाली करेगा।" राकेश के अनुसार- "मैं देना जानती थी,लेना नहीं इससे यह स्पष्ट है कि वह अत्यंत त्यागमयी थी, माँ अविचल स्थिर अचंचल और कर्मण्य थी,कर्म उसका अस्तित्व है, जीवन है और स्वभाव है" राकेश माँ को बहुत मानता और प्यार करता था। मोहन राकेश का बाल्यकाल पंजाब के जिला अमृतसर और जालंधर में व्यतीत हुआ। राकेश अपने प्रारंभिक जीवन में ही बहुत कुछ अनुभव कर चुके थे। इसलिए उनके मन के किसी कोने में यह भाव भर गया था कि दुनिया को निकट से देखो और उसे अपने ढंग से मन से जीने की कोशिश करो।

राकेश का प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही संपन्न हुई। उच्च शिक्षा लाहौर और अन्य शहरों में हुई। बचपन से ही उनके मन में जीवन की कटु अनुभूतियों की चिंता थी। सन् 1944 में एम.ए परीक्षा पास कर गये। फिर जालंघर में जाकर संस्कृत में भी एम.ए पहली श्रेणी में पास की। इसके बाद शोध कार्य में दो वर्ष लगे रहे। शोध करने में राकेश की बडी रुचि थी। उन्हें छात्र वृत्ति भी मिली यह कुछ वर्ष के बाद खतम हो गयी। कुछ वर्ष तक डी.ए बी कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। सन् 1955 में चार साल माह तक नौकरी करने के बाद त्यागपत्र दे दिया। इस समय वे घोर आर्थिक विषमता में थे। उन्हें घटों तक भूखे प्यास रहना भी पडा। सन् 1960 में उन्होंने दिल्ली विश्वविघालय में प्राध्यापक का पद संभाला लेकिन वहाँ का दकियानूसी वातावरण रास न आया। फिर अनुवादक के रूप में कुछ दिन काम करते रहे। सन् 1962 में सारिका का सम्पादक-पद साँभाला। सन् 1963 के आरम्भ में सारिका की नौकरी छोड दी। फिर आजीवन स्वतंत्र रूप से लिखते रहे।

राकेश का वैवाहिक जीवन विसंगतियों और विडम्बनाओं से पूर्ण था। उनका प्रथम विवाह सन् 1950 में हुआ,परंतु वैवाहिक जीवन सफल सिद्ध न हो सका। फलस्वरूप अगस्त सन् 1957 में अपनी पत्नी से उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया। सन् 1960 में राकेश जी ने द्वितीय विवाह किया और सन् 1963 में उन्होंने अनीता औलक के साथ रहना आरंभ किया। उनकी दो सन्तानों है अनीता औलक से पुरवा और शौली। राकेश और अनीता दोनों खुश थे और खुशी के दिन में भरपुर जीवन जीना चाहते थे। सचमुच उनका यह तीसरा विवाह सफल विवाह रहा।

मोहन राकेश को अपने घर के वातावरण तथा अपने पिता से ही लिखने की प्रेरणा तथा उत्साह प्राप्त हुआ था। उनके पिता एक जागरूक कार्यकर्ता तथा कई एक साहित्यिक एवं सास्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। पिता के साहित्यिक संस्कारों ने राकेश को गहराई से प्रभावित किया।

लिखने का आरम्भ संस्कृत भाषा में हुआ-उनके अध्यापक पण्डित राधारमण उनकी रचनाओं को सुसंस्कृत रूप देते। लेकिन जल्दी ही उन्होंने हिन्दी में लिखना आरम्भ कर दिया। " मोहन राकेश के साहित्य में उनके जीवन की वह घटना अंकित नहीं है जिसने मदनमोहन को लेखक मोहन राकेश बनाया,वह घटना है उनके पिता की असामयिक मृत्यु" उनके साहित्य में जिन्दगी का जो रूप आंकित है वह काल्पनिक न होकर उनके अनुभूत सत्य का आईना मात्र है। उन्होंने अपने साहित्य को भोगे हुए यथार्थ के निकट ही रखा। मोहन राकेश का निधन 3 जनवरी 1972 में हुआ।

जो भी हो मोहन राकेश ने गघ की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उनका लेखन किसी विशेष राजनैतिक विचारधारा द्वारा साचालित होने की अपेक्षा जीवन के साथ गहराई से जुडा है। संक्षेपत: उनकी रचनाओं का अवलोकन करके इतना कहना ही पर्याप्त है कि मोहन राकेश एक अद्भुत प्रतिभा संपन्न,युग निर्माता तथा क्रान्तदृष्टा कलाकार थे।

संदर्भ ग्रंध सूची

मोहन राकेश: व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ. सुरेश सिन्हा
जीवन और रचनाओं का विस्तृत अध्ययनमोहन राकेश का कथा साहित्य – डॉ. पुष्पलता
कहानियों और उपन्यासों पर केंद्रितनाटककार मोहन राकेश – डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल